श्रीमुक्तानन्द गिरि (नानीजी)

रचित और गीत संगीत

१

मन रे, भवे एसे रंग-रसे भुले रयेछो,
ओरे मन, अबुझ मन ! एबार गुरुदत्त तत्त्व भुलेछो।
जेनो के कार, साजे भूतेर बाजी,
सकल मिथ्या फाँकि !
ओरे मन, अबोध मन ! कामादि इन्द्रिय दश
सब जनाइ तोमारि वश।
सुकर्मे हइओ ना अलस,—एइ मिनति करि।
भवेर व्यापार नयगो सुसार,
सबइ मिथ्या फाँकि !
मन पाखीते दैय गो फाँकि
कार भरसाय भुलिये रइलि
शमन दमन करबे यदि मन, दुर्गा बोले डाको।
आर गुमान करिओ ना मन, आमार कथा राखो।
मन रे, तोमार जोरे षड़रिपु जोर करियाछे भारी।
ओरे मन, अबोध मन ! जन्मावधि पुषि यारे
याबार काले चाय ना फिरे,
देह-पिञ्जर शून्य कोरे उड़िया याय मन पाखी।
भवेर व्यापार नयगो सुसार
सबइ मिथ्या फाँकि।

(यखन) मनपाखी दैय गो फाँकि, कार भरसाय भुले रइलि
शमन-दमन करबे यदि मन—दुर्गा बोले डाको।

[स्वरचित]

२

अन्तर आत्मा गो तोमाय देखलेम ना।
देहे थेके करो छलना।
तोमार छलनार छले,
इष्ट तत्त्व याइ गो भुले,
कैमन करे करबो तोमार साधना।
अन्तरे अन्तरे थाको,
डाक दिले कथा ना कहो,
चित्तेर स्पन्दन कभु खुले दिले ना।
देहेर मध्ये सूक्ष्मरूपी
कभु तोमाय नाहि देखि,
दया करे आँखिर बन्धन खोलो ना!

[स्वरचित]

३

आर किछुइ माँ चाइ ना श्यामा चाइ शुधु चरण दुखानि।
रविर सुते बाँधबे यखन दिस् गो माँ तुइ अभय वाणी।
यखन निते आसबे शमन हात बाड़ाये धरबि तखन।
लुकिये लुकिये यास्नि मागो दिस् गो तोर चरण खानि।
दशेन्द्रिय हबे अचल, तोरे डाकबार थाकबे ना बल।
कैमन करे डाकबो तोरे शिखाये दिस् काने काने।

४

जय शिव शम्भु, हे शिव शम्भु, वृषवाहन दिगम्बर हे!
शिङा-डमरु-त्रिशूल-धारी, बम् बम् बोले डमरू बाजिछे।
शिरे जटा, कण्ठे विषधर, कैलास-शिखर-आसीन हे
भस्म-भूषित अङ्ग, ढुलुढुलु आँखि, भूत प्रेत सङ्गे नाचिछे हे।
कार्तिक-लक्ष्मी-सरस्वती क्षुधानले कातरे काँदिछे हे
सङ्गे भगवती, सबाइ अस्थिर-मति,ताँरि सङ्गे कलह करिछे हे।

[स्वरचित]

५

एसेछो माँ विश्वमाझे ब्रह्ममयी नाम रटाये,
अचिन्त्य रूपेते आछो हृदय माझे लुकाये।
तोर जगते हाट बसाये, तुइ रइलि माँ मुख लुकाये,
डुबु डुबु हलो जगत् एक बार तुइ माँ देख ना चेये।
तोमार-इ घर तोमार बाड़ी खास तालुके बसत करे
(मोरा) भूतेर बैंगार खेटे मरि तोमाके मां ना जानिये।
षड़रिपुर मायार जाले, तोमाके माँ रइलाम भुले,
जागिये दे माँ कुण्डलिनी नाभिभूले पद छोंयाये।
तोमार ऐ चरण-स्पर्शे श्वास चड़िबे ऊर्ध्व पाशे
ब्रह्मरन्ध्र भेद करिये अभय पदे नाओ मिशाये।
क्षुधा तो लगेछे श्यामा, एबार मोरे खेते दाओ माँ,
माखन-छाना-सर ननी तोर काछे माँ चाइ ना आमि,
सुधा पान कराये श्यामा दे ना माँ उदर पूराये।
सुधार भाण्ड तोमार घरे मिलबे ना आर कारो द्वारे
कार डरे ऐ सुधाभाण्ड रेखेछिस् माँ बल लुकाये।

क्षुधार ज्वालाय आकुल होये घरार परे रइ लुटाये।
तोर नामे कलंक रबे जीवन यदि याय चलिये।

[स्वरचित]

६

कृष्ण केशव हरि नारायण
कालीन दमनकारी।
देवकी-नन्दन खगेन्द्र-वाहन
पूतना निधनकारी।
बलिरे छलिते हरि आसिले वामन रूप धरि,
स्वर्ग मर्त्य पाताल समस्त जुड़ि।
इन्द्र वज्र दमन गोपिका जन रमण
गिरि गोवर्द्धन धारी।
श्री नन्देर नन्दन वकासुर निधन
अमित अमर्त्य देहधारी।
हिरण्य नाशन प्रह्लाद तारण
भयद नृसिंहरूपधारी।

७

कोथाय हरि दीनबन्धु दीने दया करो ना।
साध करे आनिले भवे कभु साड़ा दिले ना।
(आमि) वने खुँजि मने खुँजि तबु देखा पेलाम ना।
तोमार श्रीचरण बिने
धैरय ना माने प्राणे,
काङाल बोले तुमि मोरे पाये ठेले फेलो ना।

तोमार चरण पाबार आशे
खेया घाटे रइलाम बोसे
तुमि मोर काण्डारी होये एबार पारे नाओ ना।

८

भुल भुल भुल सकलि भुल,
भुल भाङ्गिते लागे गोल।
भुल भाङ्गिबार भावना भेवे
मन ये होये याय व्याकुल।
मने भाबि बलबो सत्य
बुद्धि ए करे वीरत्व,
छयटा रिपु छय दिके याय
जेमे ओठे गण्डगोल।
सूक्ष्म रूपे आछेन यिनि
काउके दैखा दैन ना तिनि
एक मिनिटे छाड़े देह
काश्राकाटिर पड़े रोल।

[स्वरचित]

९

दुर्गा देवी बसो पूजार घरे,
सिंह-वाहने खड्ग-हस्ते देखिबो तोमारे।
लक्ष्मी आर सरस्वती कार्त्तिक गणेश,
शिवेर पार्श्वे महादेव शोभियाछे बेश,
बाघ-छाल परिधान हस्तेते त्रिशूल।
बम् बम् बम् बले बाजाय डुम्बुर।

हंस पेचक साथे साथे हँदुर ओ मयूर
पदतले शोभियाछे असुर महिषासुर।
पाद्य अर्घ्य दिया तोमाय करिबो वरण
पुष्प - दूर्वा - विल्वदले पूजिबो चरण।
भोग - नैवेद्य साजाये करिबो निवेदन,
धूप-दीप-आरती दिये करिबो पूजन।

[स्वरचित]

१०

चित्तेर-इ स्पन्दने रयेछि बन्धने मन तो खुलिते पारि ना।
ओरे अबोध मन, सदाइ करिस् विचरण
देशे-विदेशे तोर कभु नाइ माना।
आबार नीरबे आसिये हृदये बसिये
करिस् नाना छलेर मन्त्रणा।
देह मध्ये छयटा रिपु बलवान
बुद्धिर संगे युद्ध करे अविराम
तबु तो ना कभु पाइलाम विराम
कार-ओ कथा केहो शोने ना।
सूक्ष्म रूपे आछे देहेर सारथि
से तुष्ट थाकिले ना हय अधोगति।
से ये सत्य सनातन नित्य निरञ्जन
कभु तारे मन! भुलो ना।

[स्वरचित]

■